नील कमल

मरिचझाँपि को छूकर बहती है जो नदी

मरिचझाँपि को छूकर बहती है जो नदी

विभाजन, विस्थापन एवं पुनर्वासन की एक विस्मृत कथा

नील कमल

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2025

© नील कमल

Marichjhapi Ko Chhookar Bahti Hai Jo Nadi

Vibhajan, Visthapan Evam Punarvasan Ki Ek Vismrit Katha

A Hindi Novel by Neel Kamal

This is a work of fiction. Names, characters, places, and incidents are the product of the author's imagination or are used fictitiously, and any resemblance to actual persons, living or dead, establishments, events or locales is entirely coincidental. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the author:

ISBN: 978-93-341-8942-1

प्रथम संस्करण: जनवरी, 2025

प्रकाशक : नील कमल

सर्वाधिकारः लेखक

आवरण सज्जा एवं पृष्ठ विन्यास: मोहसिन आलम

आवरण चित्र: सुंदरबन क्षेत्र में मरिचझाँपि - कुमिरमारी यात्रा के दौरान लेखक द्वारा लिया गया चित्र

उत्सर्ग

पृथ्वी के समस्त उद्वास्तुजन को

लेखक की अन्य पुस्तकें

कविता संग्रह

हाथ सुंदर लगते हैं

यह पेड़ों के कपड़े बदलने का समय है

आलोचना

गद्य वद्य कुछ

सम्पादन

हिंदी कविता: सम्भावना के स्वर

अनुक्रम

देवताओं की नींद वहाँ ज़रूर टूट गई है	11
रूपशा के साथ कोई नहीं है	22
वैशाख का महीना कालवैशाखी का समय भी है	32
सत्तर का उथल पुथल भरा साल	57
देश की सरहदें बाँट दी गई	72
सन पचास का वक़्त	82
देवी आगमन की तैयारियाँ	104
उनका अपराध आखिर क्या है	116
यह रिफ्यूजी स्पेशल ट्रेन है	152
बनबीवी का स्थान	180
मरिचझाँपि की कथा के बिखरे सूत्र	196
जेम्सपुर से विदा	230
माना ट्रांजिट कैम्प से मालकनगिरि	265
आमरा कारा, वास्तुहारा !	291
जो सत्य इतिहास से छूट जाता है	313

राजनीति के त्रिकोण से अनभिज्ञ 334

अब अवरोध होगा 359

कहना ही होगा

यह उपन्यास अपने मूल रूप में 'मरिचझाँपि' नाम से लिखा गया था। इसके लिखे जाने की मानसिक तैयारी ठीक कब शुरू हो गई यह कहना मुश्किल है लेकिन इतना तय है कि 2014 के आसपास इसका बीज पड़ चुका था। उपन्यास का विधिवत लेखन 2017 से आरम्भ हुआ और इसका पहला ड्राफ्ट 2020 में पूरा कर लिया गया था। उपन्यास का अंश पहली बार 'गाँव के लोग' पत्रिका के मई-जून 2019 अंक में 'मरिचझाँपि' नाम से ही प्रकाशित हुआ। उपन्यास का एक और अंश 'इंद्रप्रस्थ भारती' के मार्च 2021 अंक में स्वतंत्र रूप से 'बात चलाइए रसूल चाचा' नाम से प्रकाशित हुआ था। बीते चार वर्षों में, अर्थात 2020 से 2024 के दरम्यान उपन्यास के कई ड्राफ्ट बने और बिगड़े। अन्ततः उपन्यास अपने वर्तमान स्वरूप में प्रकाशित हो रहा है। उपन्यास के केंद्र में सुन्दरबन अंचल का एक द्वीप है। यदि एक वाक्य में कहना ही पड़े तो उपन्यास विभाजन, विस्थापन और पुनर्वासन की ही कथा कहता है। इस उपन्यास के लिए कितनी ही यात्राएँ करनी पड़ी हैं। इन यात्राओं के सहयोगी बांग्ला के विशिष्ट साहित्यिक दीपंकर राय तथा मित्र श्यामल मण्डल का ऋण स्वीकार करना ही होगा जिनके साथ बांग्लादेश और सुन्दरबन क्षेत्र की यात्राएँ संभव हो सकीं। मित्र शंकर दास और ब्रजकिशोर विश्वास ने सुंदरबन यात्रा को संभव करने में और शोध सामग्री